श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ विवाह
सार लिपि लिख्यते ॥ तत्रादौ वे
ल कोष्टा प लिख्यते ॥ प्रथम एव
रकंन्या के जन्म से जन्म रा
शि वा कन्या की कासि लग्न देखणा
उत्तं च मुहूर्त चिन्तामन [illegible] ॥ विवा
हे वी माङ्गल्य यात्रादौ ग्रह गो
चेरे जन्म राशिः प्रधान त्वं नाम
राशिं न चिन्तयेत् ॥ देशे ग्रामे
गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके नाम
राशिः प्रधानं जन्म राशिं न चिं
तयेत् ॥ काकिन्यां वर्गशुद्धौ
वादे द्यूते स्वरोदये मंत्रे पुनर्भू व
रे नाम राशेः प्रधानता ॥ रपह
बावचव [illegible] तिभकाहे पन्दर
मुहूर्तचिन्तामणि मे लिखा है ॥ प्र
[illegible] जन्म [illegible] नाम में प
[illegible] तने वांचे तपेसे
[illegible]

जन्मभं जन्मपत्रिकेन नाम मधिपेन नाम
भं व्यत्ययेन यदयोर्ज्यं दम्पत्योर्निधनं प्र
दम् । पीयूषधारायां लिखितमिदम् ॥१॥
। अब राशि मेलन विचार करना षडाष्टक
विचार करना ॥ जो वर की राशि से कं
न्या की राशि छठी वा ८ हो । अथवा कन्या
की राशि से वर की राशि छठी वा ८ हो तो षडा
ष्टक होता है ॥ यह जो शत्रु षडाष्टक हो तो
वर्जित है ॥ जो मित्र षडाष्टक हो तो शु
भ है दोष नहीं है ॥ अब शत्रु षडाष्टक
मित्र षडाष्टक के चक्र लिखते हैं

। अथ शत्रु षडाष्टकम् || । अथ मित्र षडाष्टकम्

१०	१	७	४	९	३	२	८	१०	४	११	५
५	६	१२	११	२	८	७	१	३	९	६	१२

यह शत्रु षडाष्टक वर्ज्य है । मृत्यु का...	यह मित्र षडाष्टक शुभ है यह आ... सुख...

प्र० चिन्तामणि० पत्र २५५ श्लो० ३१ विवाह प्र० मे मैत्री ष
डाष्टक त्रैयो० प्रपस हानि मे जो जो विधि दी है निर्णय वे

[illegible] अब वर की रा
शि से कन्या की राशि ५वां हो अथवा
कन्या की राशि से वर की राशि ५वां हो
तो यह नवम पंचम है अनपस कार
क है सन्तान को नष्ट करने वाला है ॥
व० मुहूर्त सिंधु मे और मुहूर्त मार्तण्ड
मे लि० है ॥ जो वर कन्या की राशि की मि
त्रता हो तो शुभ है ॥ जो शत्रुता हो तो अ
शुभ है ॥ अब वर कन्या की राशि से
द्विर्द्वादश चक्र देखना शत्रु द्वि
र्द्वादश शुभ नहीं है वर्जित है मि
त्र द्विर्द्वादश शुभ है श्रेष्ठ है ग्राह्य है

अथ शत्रु द्विर्द्वादश चक्र

३	८	५	१	९
४	७	६	१०	२

अथ मित्र द्विर्द्वादश चक्र

११	१	१२	२	८	४
९	६	१०	३	६	५

देकर यह
शीघ्रबोध मे शत्रु द्विर्द्वादश दिया है वे
लि० है ॥ और पीयूषधारा मे पत्र २५६ पर वे

षडाष्टक त्रयोदश धन व्यय धननाश न० ५ शत्रु द्विर्द्वा
दश का फल लि० है ॥ यह शुभ नहीं है

पीयूषधारायां पत्र २६५ पर श्रीपति और के शास्त्र
वैसे ही यदि मित्रता ... स्यात्तदा नाडीदोषो गणतोऽत्र
सद्भावसमन्वयोगे ... दोषो नास्ति ॥४॥

~अथ गण का विचार लि० है ॥ अथ गण
णचक्रम् ॥

अ.	मृ.	रे.	ह.	पु.	पुन	अनु.	श्र.	स्वा.	दे.
पू.फा.	पू.षा.	पू.भा.	उ.फा.	उ.षा.	उ.भा.	आर्द्रा	रो.	भ.	म.
कृ.	म.	श्ले.	वि.	श.	चि.	ज्ये.	ध.	मू.	रा.

राशिस्वामियों की मित्रता है तो गणदोष नहीं ... प्र. मा. ह ८ पत्र ३८

जो वर का गण राक्षस हो कन्या का मनु-
ष्य हो तो शुभ है एकाधिपत्य वा पर-
स्पर राशियों के स्वामि की मित्रता है तो दो-
ष नहीं होता है जो कन्या का गण राक्ष-
स हो वर का मनुष्य हो तो अशुभ है
वर्ज्य है ना ~प्राव रूपक में परिहार सो शु-
भ होता है जो राशियों के स्वामि की परस्प-
र मैत्री हो अथवा एकाधिपत्य हो तब गण दो-
ष नहीं होता है ~ छ० चिन्तामणौ पीयूषधारायां
पत्र २५८ पर गण का परिहार भी लिखा है गण
का ~और ~ग्रन्थ का वा...

यह परिहार लि० है ॥ ~और इसी पत्र २५८ पर म-
न का वाक्य भी लि० है जो वर कन्या की नाडी एक च के

येन्यो राशि स्वामिनो० यह वाक्य है प० २६१
इस वाक्य से जो कन्या राशि ज्ञात होवे और स्वामि भाग

हो० और स्वर वर्ण्या की राशि विषे परस्पर वैर भी
होते तो गण दोष नहीं होता है धनबोधक में लिखा है
मु० पीयूषधारा में पत्र २६१ पर है
अथ वर्ण विचार मुहूर्त चिन्तामणी

वर्ण:	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
राशयः	१२।८।४	१।५।९	२।६।१०	३।७।११

शीघ्रबोध में लिखा है "नो तमम अष्टवे के
न्यां वा निर्णये विशेषतः" जो कन्या वि
प्र वर्ण की हो० और वर उत्तम वर्ण होतो
नेष्ट है परन्तु अधम नहीं है "विप्र वर्णे
कन्या नारी शूद्र वर्णे च पः पतिः ध्रुवं भवति वै
धव्यं शास्त्र स्पष्टं हितायदि इत्यादि वाक्यों से
अशुभ है। और अन्य विषय के में परि
हार भी लिखे हैं वर्ण के "शीघ्रबोधे" नाडीदो
षस्तु विप्राणां वर्णदोषस्तु क्षत्रियः" यह प
लिखा है। और मु० मार्तण्ड में भी और ज्यो
तिःसार में भी वर्ण का परिहार लि० है "हीन
वर्णो यदा राशिः राशीशो वर्ण उत्तम
तदा राशीश्वरो ग्राह्यः तस्य राशिं न चिन्त
येत्" अर्थ० राशि करके जिसका वर्ण हीन हो
और राशि के स्वामि का वर्ण उत्तम होय
तो शुभ है राशि के स्वामि का वर्ण लिखते हैं

ग्र० पीयूषधारा मे पत्र २६४ पर वर्णदोष का दो
॥ ने के साथ लिखा है ॥

मेष वृश्चिक राशि का स्वामि मंगल है तिस
का वर्ण क्षत्रिय है ॥ २।७ का शुक्र है तिसका व
र्ण विप्र है ॥ ३।६ का स्वामि बुध तिसका व
र्ण शूद्र है ॥ ९।१२ का स्वामि गुरु है ति
सका वर्ण विप्र है ॥ १०।११ का स्वामि शनि
तिसका वर्ण शूद्र है ॥ ४ राशि का स्वामि
चन्द्रमा तिसका वर्ण वैश्य है ॥ ५ राशि का ॥
स्वामि सूर्य तिसका वर्ण क्षत्रिय है ॥
परिहार आवश्यक मे लिखा है वर्ण
का दोष नहीं होता है २ परिहार से

अथ नाडीविचारः ॥ नाडीचक्रं ॥

आ.	म.	अं.
अ.	भ.	कृ.
आर्द्रा	मृ.	रो.
पु.	पुष्य	अश्लेषा
उ.	पू.फा	म.
ह.	चि.	स्वा.
ज्ये.	अ.	वि.
मू.	पू.षा	उ.षा
श.	ध.	श्र.
पू.भा	उ.भा	रे.

जो वर कन्या की
एक नाडी हो आद्य
हो ॥ वा दोनो की मध्य
हो ॥ वा दोनो की अं
त्य हो तो नाडी दोष
होता है ॥ सो यह
नाडी दोष वर्जित
है ॥ वे ष है ॥

पादवेधोऽस्ति नाडू॥ एकनाडीविवाहे च गुणैः सर्वैः समन्वितः
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योर्निधनं यतः॥१ त्रिनाडी सर्व
देशेषु वर्जनीया प्रयत्नतः॥२

प्र॰ चिन्तामणि पीयूषधारायाम् विवाह प्र॰
पत्र २६८ आद्यैक नाडी [illegible] तो विवाह
गं मध्यस्थ नाड्या [illegible] योर्विनाशः॥
अन्त्यसाम्ये वैधव्यं मता वदुःखम् तस्मा
त्त्रैते स्त्रः परिवर्जनीयाः॥१॥ यह दोष
आदि का लिखा है॥ अब नाड़ी का परिहा
र भी लिखते हैं॥ शीघ्रबोधे॰ नाडीदोषस्तु वि
प्राणां मिति॥ और मु॰ चिन्तामणि के
टीके में पीयूषधारा में विवाह प्र॰ पत्र॰
२६८
त्रयोपाद स्पर्शे [illegible]॥ दोषापन
त्त्रये नाड्यां मृत्युञ्जय जपादिकम्
विधाय ब्राह्मणान् [illegible] तर्पयेत् चैना
दिना॥१ हिरण्य धेनु [illegible] दद्यात्
तु वर्णादि कूट के जो वोन्वे वसन
हैं सर्व दोषापहार कहा है॥ यह
परिहार दान का भी आवश्यक है पत्र
२६४ पर लिखे हैं॥ और राजा नृप
मधे ब्राह्मणेति [illegible] वर्ण को [illegible]

उत्तरप्रोष्ठपातनाममें उत्तरामें दृष्ट
नक्षत्रका है?

उत्तराप्रोष्ठपाद्यवनक्षत्रेक्यपि
प्रोभिन्ना१पक वाक्य मु० चिन्तामणि
के पीयूषधारामे पत्र २६६ पर
लिखा है सो व० प्र० हृ तीसरे
मे लिखा है॥ एतद्द्वितीयाविवा
ह विषयम्॥ पद वाक्याद्द्वितीयावि
वाह विषय मे लिखा है॥ प्रथम
पत्र १०५ पर॥ और नाडिका परिहार
लिखते है मु० चिन्तामणि पीयूषधारा
याम् प० २६६ विवाहप्र०॥ एकर्क्षे चैके
राशौ च विवाहः शुभः स्मृतः संको
चेत् तदाकाप्येभिन्नः पादो यदा तयोः
१ संकोचेन्नाम आवश्यक का है॥ और
जो वर कन्या की एक राशि हो नक्षत्र
जुदे जुदे हो अथवा नक्षत्र वर क
न्या के एक हो राशि न्यारी हो जुदी जु
दी हो तब तो शुभ है और जो एक
ही राशि हो एक ही नक्षत्र हो तब वध

मनती है ॥ जो ऐसा यो
ग हो जावे तो चरण भेद देखणा ॥
पाद भेद से शुभ है ॥ उदाहरण
भरणि के प्रथम पाद में वर का जन्म
है और भरणी के द्वितीय पाद में क
न्या का जन्म है यह चरण भेद होणा
पाद शुभ है ॥ परन्तु यह वी संवाद वि
षय है ओ वा वय पूर्वोक्त शास्त्र आये है ॥
और मु० चिंतामणि पी० पू० षधारा में पत्र
२६१ पर मैत्र्यां राशिस्वामिनो० यह
वाक्य लिखा है स्त्रीपुंसयो राशिस्वामिनो मैत्र्यां
सत्यां गणानां दुष्ट गणानां दोषो न स्यात् ॥ यह
परिहार वी है ॥ और पत्र २६५ पर राशि कूट वे
धि नक्षत्रे· यह वी परिहार है ॥ स्त्रीपुंसयोरे
का राशि है सति पादे भिन्न नक्षत्रे दांशस्थान तु दाना
डी दोषो गणानां चरसदा सम नक्ष गणानां च
दोषो नास्ती ॥ यह वी परिहार प्रत्यक्ष है ॥ और
पत्र २५५ पीयूषधारा में विवाह प्र० में यह
वाक्य परिहार का लिखा है ॥ प्रो के दु

प्रीतिषडाष्टक तौ जव शुद्ध है जो नाडी दोष न हो ॥२॥
नाड्यर्च शुद्धि यदि प्रहवा वयं है २

षष्ठमकुंटके परिणायस्वकाधिपत्ये शुभो
ऽथो राशीश्वर सौहृदे पि गादंतो नाड्यर्च
शुद्धि यदि गमन्यचे शयवयेवैलिवस
खिते नाड्यर्च शुद्धे तथा तारा शुद्धे वश्रेन
राशी वश्यता भावे निरुकोधवधैः ॥ प्र
षटीका प्रोक्तद्ध षट् राशिकूटे सत्यपि चेद्व
योः स्त्रीपुरुषराश्योरेकाधिपत्ये ए
स्वामित्वे परिणयो विवाहः शुभो गदि
तः ॥ यथा षडाष्टके मेष वृश्चिकयोः तु
लावृषयो वै नवम पंचमे मेले एकाधि
पत्यस्य भावेः ॥ द्विर्द्वादशे मकर कुंभ
योः ॥ प्रश्नवा राशीश्वरयोः राशी स्वामि
नोः सौहृदे मैत्रे परिणय शुभो गदि
तः ॥ तथा षडाष्टके ॥ मीन सिंहयोरिति
दो ॥ नवपंचमे मेष धनयोरित्यादौ
द्विर्द्वादशे मीन मेषयोरित्यादौ ॥ यदा
वशिष्ठः ॥ द्विर्द्वादशे नवपंचमेवा
षडाष्टके राशौ सयोषितो एकाधि
पत्ये भवने प्राणमैत्रे शुभमाहु पाणिपीडनं

गंविधे वैधिक ॥ राजमार्तंडे पि०मवे
ते त्रिकोण व वृद्धि त्र वितो द्विवेदरे चार्थ
ग्रपे ते कंन्या व धू ष्टके सोख्य फलं वि
धे ते स्त्री ॥ विवाहो ग्रह मे न आवे ॥ १
यह परिहार षडाष्टक नवम पंचम द्विर्द्वादश ज
ण राधा सन मनुष्यकी नाडि और वरणई के
सभके लिखे है ॥ पीयूषधारा मे ॥ श्री: ॥
अब मिलान मे मूल श्लेषा ज्येष्ठा वि
शाखा इन का विचार करना जो वरकं
न्या के जन्म लग्नो मे वर का जन्म कन्या
का जन्म मूल के प्रथम चरण मे कं
न्या का जन्म हो पतो अपने श्वशुर को न
ष्ट करेगी चौथा ४ चरण मूल का शुभ है
श्लेषा के [illegible] २।३।४
चरण मे जो कंन्या का जन्म हो पतो
अपनी सासु को नष्ट करेगी ॥
श्लेषाका प्रथम चरण शुभ है ॥ ईसी
प्रकार पुत्र का जन्म हो पतो अपने श्व
शुर और सासु को नष्ट करेगा मू०
का प्रथम व ३ चरण मे श्वशुर को ॥ श्ले०के
२।३।४ ३ चरण मे जन्म हो पतो सास
को नष्ट करेगा ॥ ज्ये०का ४ चरण शुभ है ॥

तनुसापत्नमातरं ॥ मासी
कोनही मारेगा ॥ सा
दी [illegible] हंति ॥

श्लो० का प्रथम में [illegible] रूप है ॥ १ ॥ चितामे
[illegible]
वा रे [illegible]
जा चे [illegible]
त [illegible]
जा न म [illegible] ॥ [illegible]
हं ति दे व [illegible] ॥ वि
शा षा क ४ [illegible]
[illegible]
ष है ॥ विश [illegible]
द्वि [illegible]
दा [illegible] पाद सा पा ध पा [illegible] त
यो: [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] तमा [illegible]
जो [illegible] के २ चर्णो [illegible] है पी [illegible]
४ चौ पा [illegible] है ॥ [illegible] षा
के २ चर्णो [illegible] है पी [illegible] ला ४ चौ
पा चर्णो ने [illegible] है पह लि [illegible] है ॥
य ती [illegible] ति [illegible] मा [illegible] मे लिखा
है ॥ [illegible] ॥ [illegible]

हारवीलिखते है ॥ मुहूर्तमार्तण्ड पत्र
१३ टीका का श्लोक है नारद का वाक्य है ॥ उक्तं च
नारदेन ॥ मूलव्यालभवो दोषो विवाहे पं० उ
सह तुस मौंज्या व धर्मादृश्चैं पुंसा नेवेति
के ... ॥ और एक यह वी परिहार है ॥ ...
... भाव से तिरह मूलतो दे जो
वह नेमोर्ध प० ॥ और वर कन्या के माता पिता पर स्यु
हो ... होतो मूल श्लेषा ... रे० ज्येष्ठा० मघा ई
नमे उत्पन्न हुई कन्या का दोष नही होता है पत
वी ... मार्तण्ड में लि० है प० १३ पर ॥ और मौंजी बंधन
होलिया हो ... ब्राह्मणो के ८ वर्ष का मुख्य काल है
क्षत्रियों का ११ वर्ष मे मुख्य काल है वैश्यों के १२ व
र्ष उपनयन का मुख्य काल है और इन वर्षों की अ
वधि से पर स्वस्व वर्णों का उपनयन हो लिया हो
पाइन वर्षों की अवधि से उपरान्त हुआ हो
तब भी मूल श्लेषा ज्ये० रे० मघा अश्वि० इनमे उ
त्पन्न हुई कन्या वा वर का कोई भी दोष पुरु
रादि को नही होगा यह वाक्य मु० मार्तण्ड मे लि
खा है पत्र १३ पर ॥ देवीघात के पक्षवाड़े मे
यह लिखा है के मघा के प्रथम चरण मे ॥ और

[illegible]

मूलतत के प्रथम चरण मे रेवती के चौथे चरण मे विवा
ह का निषेध है [illegible] पंचम पाद ॥ वचोक्तः प्रथ
म पाद नेष्ठ है रेवती [illegible] है पर [illegible]
इनका [illegible] मे [illegible]
लता है [illegible]

७ प्रश्न वर कन्या के जन्म नक्षत्रो से मैत्री के योग
का विचार करना काशी के पंचांग मे [illegible]
कुए लीसवी विचार करना [illegible] मैत्री के योग
[illegible] के [illegible] जो [illegible]
[illegible] मे हो [illegible] तो [illegible]
[illegible] हो तो [illegible] हो [illegible]
[illegible] तो न होता [illegible] नहि [illegible]
[illegible] मे [illegible] है [illegible]
[illegible] हो [illegible]
होते [illegible] हो [illegible]
[illegible]
[illegible] मे [illegible] न हो [illegible]
हो [illegible]
[illegible]
कुज दोष [illegible]
[illegible]
है सो [illegible] है [illegible]

[illegible]

प्रथम विषकन्यायोग लिखते हैं ॥ शनि सूर्य भौम इनमे से कोई तीन ग्रह यदि इन नक्षत्रों में हों अर्थात् शतभिषा कृत्तिका आश्लेषा और इन तीन नक्षत्रों में से किसी में हों और द्वितीया सप्तमी द्वादशी में से कोई तिथि हो तो तब विषकन्या होती है अर्थात् ऐसे योग में जो कन्या जन्म लेवे सो विषकन्या होती है ॥ द्वितीय योग कहते हैं ॥ एक क्रूर ग्रह और एक शुभ ग्रह कन्या के लग्न में पड़ जावे तो विषकन्या योग होता है ॥ तृतीय योग ॥ जो कन्या लग्न में सूर्य शनि मंगल हो त्र[illegible] शत्रु स्थान में हो मंगल [illegible] तो भी विषकन्या योग होता है ॥ इत्यादि विषकन्या योग बृहत्पाराशर होरा आदि ग्रन्थों में लिखे हैं [illegible] प्रकृति [illegible] और [illegible] नीचे लिखे हैं ॥ [illegible] विषकन्या दोष [illegible] ॥ सावित्री व्रत आदि के [illegible] शान्ति [illegible] के साथ [illegible] लड़की का पीपल वृक्ष के साथ विवाह करके फिर विवाह करे तो वर को [illegible] दोष नहीं होता ॥ और जाति [illegible] बहुत है [illegible] तो जन्मकुण्डली में [illegible] पति [illegible] विषाख्या कोई [illegible] नक्षत्र [illegible] ति वैधव्य होते हैं ॥ भावार्थ जो सातवें घर का पति अर्थात् [illegible] जन्म लग्न से वा चन्द्रमा से सातवें घर

मानसागरीमें पत्र १६० पर कै मृत्यु के योग का परिहार है

कंन्या के जन्म लग्न से ७ शनैश्चर न तो " लघुजातक
१.१११

मे वैठा हो तो विषकंन्या का दोष नहीं होगा ॥ यह परिहार है ॥ सन्तान की हीनता और वैधव्यादि दोष सम्भव न होवेंगे ॥ अलम् ॥ स्त्री: अथ मित्रामित्र के विवाह योग की विवेचना ॥ जो स्त्री की जन्म लग्न में शत्रु के घर में स्थित हो और [illegible] १२ वार वैधव्य [illegible] न हो [illegible] का योग होता है [illegible] विचार [illegible] विस्तार की लिखा है ॥ लघुजातक [illegible] ॥ और वर कन्या के जन्म लग्नो में यह विचार करना कंन्या के सप्तम भाव का पति निर्बल न हो [illegible] १२ भाव को निर्बल सबल [illegible] न हो और होवे तो पति का नाश होय और वर के [illegible] भाव का पति निर्बल न हो यह विचार करना और वर के अष्टम भाव का पति निर्बल न हो [illegible] आयु का निश्चय करना और कंन्या के लग्न में स्पर्श न हो ॥ वर के लग्न में स्पर्श न हो ॥ और सन्तान भाव का विचार भी करना [illegible] व नाडी आदि पर [illegible] इस वाक्य से [illegible] विचार करना ॥ अलमति [illegible] ॥

कंन्या के लग्न से ७ मंगल न हो [illegible] लघुजातक वीकरे | इतनी बातों का विचार कर जामित्र में | कंन्या के लग्न से [illegible] न हो [illegible] लघुजातक [illegible]

म. चिन्तामणि मे जन्म का स्वरूप्प ने ष्ट है ॥ स्थानं जन्म
त्रिनाशाधिप [illegible] कर ॥ यह लिखा है ॥ पृ. १४८ ज्योतिः
[illegible] से [illegible] ९२ [illegible] वाद

अथ विवाह साह का विकार लिखते है ॥
साहि पद्धति ना विचार करने को प्रपंच मे व
रकंन्या को स्वरूप उपरका कैसे देखना ॥

वरको स्वरूप [illegible] १० । ११ [illegible] जन्म १ का
॥ [illegible] ने ष्ट है ॥
कं [illegible] ॥ २ [illegible] है ॥ जन्म
का [illegible] ८ । १२ ने ष्ट है
और [illegible] दोनो को विचार ना ॥ व. ज्योतिस्सा
र मे [illegible] चन्द्रमा मे पञ्चक मे विवाहादिव
[illegible] लिखे है ॥ और मुहूर्त मञ्जरी मे व
[illegible] भी लिखा है ॥ पत्र २ पर
[illegible] जन्मस्थ विधुः [illegible]
द्विपञ्च नवम [illegible] के पदो [illegible]
॥ चिन्तामणि के ज्ञ्यौ वर प्रकरण मे पत्र
१४४ पर चन्द्रमा शुभ लिखा है ॥ श्लोक० जन्म
[illegible] जन्म का चन्द्रमा मन को
देता है [illegible] है ॥ और [illegible] के पञ्चा
ङ्ग मे [illegible] चन्द्रमा ६ । ८ । १२ शुभ लि
खा है ॥ [illegible] ३ । ५ । ८ शुभ है ॥ व. ज्यो
[illegible] है ॥ द्विपञ्च नवम मे शुभ है
[illegible] देश के [illegible]

देवीशालल्ला होरवाले के पत्र्याऊ मे जन्मके चन्द्र माका पु
रिहार देशमे द कर रक्का लिं-है॥ सो सांख्य शास्त्रादि देशोंमे वर्जि
त है [illegible]॥

चतुर्थ [illegible] उक्त है॥ १॥ श्री दुर्बोध मे वी
प्राद्ये चन्द्र [illegible] के [illegible] पदवाच्य चन्द्र
जन्मका [illegible] लिखा है॥ [illegible]
वाह मे [illegible] चन्द्र [illegible]
रखा है॥ [illegible] के [illegible]
स नेवत [illegible]
न्दू मा [illegible] और [illegible]
ज्योतिष [illegible] चन्द्र मा
[illegible] लिखा है॥ [illegible]
देवाघात के [illegible]
न्यो [illegible] चन्द्रमा [illegible]
भा [illegible] शास्त्रों मे बहुत बाधा [illegible]
[illegible] लवे पत्र्याऊ मे [illegible]
[illegible] है [illegible]
[illegible] काव्य [illegible]
घते हथे॥ [illegible] कन्याको चन्द्रमा [illegible] देखना

वर को विवाह मे वि [illegible] वर्षका होना [illegible]
है कन्या को सम वर्षका होना [illegible]॥
मु॰ चिन्तामणौ [illegible] धि [illegible]

मुहूर्त रचना ॥ अथ प्रथम वर्ष वर्जित लिखे है विवाह मे ॥ प्रथम वर्षे वर्जयेत् ॥ मुहूर्त रचना ग्रन्थ ॥ माघ १ चैत्र ४ पौष ८ घोडश

न ॥ प्रथम वर्षे प्रथम वर्षे को परिहार करते है ॥ १ ॥ इसका

अर्थ ॥ प्रथम वर्ष की कन्या होती

है [illegible] प्रथम वर्ष ॥ चिन्ताम

णि पीयूषधारा [illegible] प्रथम वर्ष व्याति

कन्या [illegible] विवाह तो तस्योत्तर है

[illegible] ॥ अथ

[illegible]

[illegible]

तो [illegible] चिन्तामणि [illegible]

[illegible] सो प्रथम वर्ष

[illegible] सो कन्या [illegible] वर्ष से कम होते

तब [illegible] विवाह करना जो कन्या

दश वर्ष से ऊपर की होत तब पहले पूर्वोक्त

वाक्य जो लिखा है [illegible] ॥ अथ [illegible]

[illegible] दशवर्षीयां [illegible] दशवर्षा [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] तब ॥ और [illegible] जो [illegible]

लिखा है ॥ चिन्तामणि पीयूषधारा के

पत्र २३ पर [illegible] लिखा है [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ मास [illegible]

[illegible]

दूर्ध्वं मथुग्मवर्षे शुभेतु मासत्रयं नवमावधि ॥
विवाहे शुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो ग-
र्ग विदांवरिष्ठा: ॥ [illegible] शुभे दुर्ग्गा नारी शुभा
तु विधवा भवेत् ॥ [illegible] भो [illegible] शुभे
विवाहे सा पतिघ्नी [illegible] ॥ अथ प्र
[illegible] वर्षे भवे [illegible] पो [illegible]
वर्ष: [illegible] के न्यास [illegible] ॥ अ
वाक्यवती पत्र [illegible] ॥ [illegible] वर्षे
र जन्मतो विषमे वर्षे युग्मे मासत्रयं पाने [illegible]
नव मासावधि ॥ समवर्षे युग्म मासेत्रयं
च ॥ इसीवास्ते ॥ मासत्रयादूर्ध्वं मिथुन वर्षे
शुभेतु मासत्रयं नवमावधि ॥ [illegible]
है ॥ भाषा ॥ जन्मते ४ वर्ष ३ मही ने से उपरान्त
नवमास गर्भ को मिलकर पंचम [illegible]
नित्य युग्म वर्ष होता है विवाह में शुभ
लिखा है ॥ इसी प्रकार जन्मते ६ वर्ष
३ मास उपरान्त नवमास गर्भ को मि-
लकर के युग्मवर्ष होता है ॥ याप्रकी
र जाणना ॥ अथ १० वर्ष में पहले [illegible]

संस्कार म प्र पृ ३५ पर भी १२ वर्ष मे विवाह का दोष
लिखा है पत्र ४५ पर

८ वर्ष ६ मास की जब कन्या हो जावे तब
शुभ वर्ष (८) मा के मिला जावो हि इराव
सं पूर्ण होने से ओ ६ मास रहे है
उनमें विवाह का [illegible] हो वो
शुभ मे अनुचित क [illegible] सके है ॥ यह न
ही कै [illegible] मास हो इस वर्ष के जब पा मे
विवाह हो वै र ना नहीं अनुचित ७ मे
होने चाहिए ॥ ध [illegible] को २ ११ पार वेद
मि [illegible] ना ॥ ११ वर्ष ८ मास जावे हो
[illegible] अनुमति तब उन तीन मास मे
विवाह के [illegible] लेना [illegible] अनुचित है
होता है के २ [illegible] वै वर्ष का दोष नहीं
होता है ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] १० वर्ष तक दश [illegible] ॥ दश वर्ष
से उपर [illegible] तब लावै तो विवाह मे
[illegible] लावै ला हे ॥ [illegible] देवे
[illegible] के पश्चात मे [illegible] है [illegible]
[illegible] कर लेना ॥

अथ विवाहादि प्रथम कार्य में क्षयतिथि व वृद्धितिथि व
र्जित लिखे हैं ॥ मुहूर्त गणपति में पत्र ७५ पर लि० ८
जीत लिखे है ॥ मुहूर्त चिन्तामणि में
, श्लोक ६ के पाठ टीका अनुसार
पत्र ३० पर [illegible] के [illegible] लिखा
का क्या है ॥ अब यह [illegible] दोषों के चूड़ामणि
व [illegible] जितः [illegible] पद्धति [illegible]
~~[illegible]~~ ॥ त्रिद्युस्पृक् [illegible] ये दो धुंसी
त्पः के [illegible] सद्य हंति पद्धत्याप [illegible] यम
[illegible] धनव्रतम् २ ॥ अथ क्षयतिथिः लक्षणम् ॥ यत्र यो वार स्तिथि क्षयान्तम् स्पृष्ट [illegible] स्ती
पतिथेः [illegible] भाग मपि स्पृशति तत्र
वा मध्यमा तिथिः क्षय संज्ञा ॥ यथा [illegible] वमी
रवौ घटिका [illegible] दशमी रवौ घट
पंचाशत् [illegible] पद [illegible]
का [illegible] रदि वारे [illegible]
ति दशमी तिथि क्षय संज्ञिता [illegible]
ता ॥ अथ तिथि वृद्धि लक्षणम् ॥ [illegible]
तिथि वार [illegible] स्पृष्ट्वा [illegible] तीय [illegible]
दिमं [illegible] भागं स्पृशति तत्रस्था तिथिः
वृद्धि संज्ञा ॥ त्रिद्युस्पृग् [illegible] चे [illegible]
यथा [illegible] रवौ अष्ट पंचाशत् घटि

कापन्त तजय तु थी सोमे पष्टी द्वि घटिका
तो भौम वासरे चतुर्थी घटिका त्रयम्
बुधवारे चतुर्थी वार त्रय सप्त ग्य तिथि
[illegible] घटिका [illegible] तिथि
तिथि [illegible] तिथिः ति
थिपु [illegible] चैका [illegible] घटि
[illegible] घटि
ग.व मे दिन [illegible] भवति [illegible] प्रमणो
सम्पक् प्रयो प्रनम् [illegible] का परिहार
उपर लिख दिया है शुभकुसा [illegible]
में परिहार लिखा है पत्र २० पर [illegible]

और विवाह मे और शुभ कार्य मे रिक्ता तिथि का
दिन [illegible] अथवा और मासान्त वर्जित लिखे हैं
[illegible] और
और तिथि के अन्त की २ घटि और नक्षत्र
के अन्त की २ घटि विवाह मे वर्जित है
और नष्ट चन्द्रमा वर्जित है चतुर्दशी को
जो चन्द्रमा हो वो ही चन्द्रमा अमावस्या को
जो हो पर तो वे दृष्टि आको काहा नहीं करना॥
जो अमावस्या का चन्द्रमा प्रतिपदा को होगा

मुहूर्तगणपति मे पत्र पर पर कं ना [illegible] मे। और रत्नादिक मे
[illegible] भद्रा का दोष न हि होता है पत्र [illegible]

तो प्रति पदा को साहन नहीं करणा॥ मुहूर्त
गणपति मे लि० है॥ ज्येष्ठे चन्द्रे ७ मी [illegible]
न्याह स्थान [illegible] विवर्जयेत्॥ नक्षत्र चन्द्र
मा विवाह मे वर्जित है [illegible] जात है॥ और
विवाह मे भद्रा को [illegible] वार नाम [illegible] के
[illegible] हार [illegible] लिखे है मु० [illegible]
[illegible] मे लिखे है और के मे वैसे ही है॥ और
[illegible] भद्र पर्याय सा [illegible] २२ और [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
लि० है॥ और यात्रा प्रात को पोरना रहे
[illegible] मास [illegible] प्रति [illegible]
[illegible] के [illegible] हाय [illegible]
[illegible] लिखे है॥ जो वर कं न्या मा
घ अभक्ते जे है तो जन्म मास जन्म नक्षत्र
जन्म तिथि जन्म वार को निषेध है जे० नाहै वे तो
दोष न ही है॥ और मुहूर्त चिन्तामणि पीयूष
धारा मे पत्र २४० पर पहवो का लि० है
[redacted]॥ और मुहूर्त गणपति मे पत्र २२
वा २२८ पर वो ही वाक्य लिखे है॥ और मा

सम्मे ३ ज्येष्ठ का निषेध लिखा है वर कन्या जो
है हों और ज्येष्ठ मास हो तो त्रिज्येष्ठ ने
षिद्ध यह लिखा है॥ सो फेर पूर्व धारा पे
पत्र २६० पर ज्येष्ठ नृपने कुवीत विवा
ह सर्वे सम्मत प्र पूछा लिखा है॥ फेर यह वी
लिखा है कि त्रिस्थ पूर्वक अग्रा ह्यो तिः
सत्य॥ वेश्यक वि स्वर्ग पूर्वक तिकारस्पस्य का
ज्येष्ठ मासे पि विवाहो कार्यः इति के वि
धृष्ट॥ फेर भी मरद जका वाक्य हो
खा है॥ ज्येष्ठे ज्येष्ठ स्य कुवीत मासके
रवौ वैशेषिते नो सवा प्रदीनि का पाणि
दिनेषु नानि चवर्जयेत् ॥ दूषणादि नव
जेन्द्रे सो लिखे है॥ और भे हुत गणप
तिंमे पत्र २२५८ पर यह वाक्य लि
खा है॥ नेष्टं त्रिज्येष्ठ मुद्वाहे द्विज्ये
ष्ठं मध्यमं स्मृतं कृतिकास्थे रवौ के
चिदाहु त्रिज्येष्ठ नेष्टु शुभं जगुः इ
ति क्रम कुरूणां॥ यह वाक्य लिखे है॥
इन वाक्यों से ज्येष्ठ नृपका कुछ दोष
नहीं है॥ ~~[illegible]~~
~~[illegible]~~ है॥ और भे हुत चिन्तामणि पी

वि॥

एवं धर्मसिंधुमें पत्र २७ पर यह लिखा है
मत्र ज्येष्ठपुत्र है और ज्येष्ठ मास वैसे
मार्गशीर्ष प्रथमं तौ ऐसा निषेध मा
का स्यः ॥ मार्गशीर्षे तु ज्येष्ठौ ज्येष्ठ वधू वरौ
तं मेषवृषस्थ एव च हुते नैष निषेध इति
ज्ञातं तत्र अन्यत्र नि आपि ॥ मार्गशीर्षे तपा ज्येष्ठे
दोषं परिणप्रतिः ज्येष्ठपुत्र है और ज्येष्ठ पत्न
पूर्व वर्जयेत् ॥ इति कालनिर्णय तं सन्त
तेसिंधु ग्रंथमें पत्र १०८ पे लिखा है ॥
इदं दाक्षिणात्य प्रसिद्धम् ॥ [illegible]
[illegible] लिखा है और मे
हुए [illegible] ज्येष्ठ कृतम् ॥ ज्येष्ठ मास
मार्गशीर्षमें विवाह कर लेना ॥ अत एव
इति तेंगारस पातिमें पत्र २५ पर गुरु अस्त में
अस्तमें और ग्रह केदल दिन में और
न्यूनाधिक मास में और गुरु वो दिन
में और गुरु के वक्र और प्रतिवार
में शुभ कर्म नहीं करना लिखा है ॥ और
गुरु के बाल्य वृद्ध में भी शुभ कर्म में
न पहले दु दिन सीध तक नहीं
करना लिखा है ॥ धन मीन की संक्रान्ति में
भी नहीं करना ॥ गुरु है व [illegible] ॥

मु० गणपति पे वीति खा है॥ वक्रातिचार जे जीवेत्व मा विशतिवासरानुपार सज्जपत्रेतः कर्म्या दृतो ब्रतादिकं शुभम् यह पत्र २९ पर है

१५

जो द्वे पदाजर : प्रभु वी में पखवादि दोपः स्तु मेकर्मणो वर्जितं [illegible] वो दिस जरख न हीं है॥ [illegible] पधार में लिखा है जो सरू प्रौ गुरु [illegible] के होगा वे बो है गुर्वी दिस [illegible] में [illegible] लिखा है॥ इस कोवार [illegible] वो [illegible] है [illegible] में लिखा है गुर्वादित्ये दश दिन हि [illegible] हे [illegible] गुर्वे क्रातिचार [illegible] पक्षा [illegible] दिवस मान १ प्रकृत [illegible] तिप० २९ [illegible] गुरु के वक्रातिचार का दो ष नहीं होता है यह लिखा है॥ [illegible] त्रिकोण [illegible] संस्थे तु जीवे वक्रातिचारिणी न दोष [illegible] [illegible] वार [illegible] [illegible] के [illegible] अतिचार [illegible] दोष नहीं यह पद्य [illegible] लिखा है॥ [illegible] [illegible] जो एक मास वा दो मास के लिखे हैं॥ सो मुहूर्त गणपति के पत्र २२ पर जो वाक्य लिखा है जिससे दोष [illegible] देशों में नहीं होता है वाक्य यह है॥ [illegible] गौड [illegible] देशे [illegible] [illegible] [illegible] ॥

राजमार्तण्ड २०७ प्रति चोरे सप्त दिन [illegible] बादश [illegible] चनी चस्थिते
[illegible] में [illegible]

मृतचिन्तामणौ ... धारा याम् दिवा
...प्रकरणे ... २५२ ... १९ ... पत्रि
... पीड ... न च
वा ... मातावः ... पि ... मरणं न च स
कुले ... मरणं ... मरणे ... न च
... गोत्रे ... सहोदर कन्यके न
... वा ... न पित्
... निजकुले स्ववंशे सुतस्य विवा
... परतः ... कन्याया: विवाहेन
स्यात् ॥ ... न दोषः ॥ निजकुले
स्ववंशे पुत्र ... कन्यायां वा मरणात् वि
वाहात् ... ऊपनयनं ...
... समावर्तनं वा ...
...तनं कार्यम् ॥ पदार्थ ॥ ...
... पादवीडः मरणान्तः मरणं नम्
मरणात् मरणे नं कार्यं ॥ मरणं विवाहं
कन्याविवाहादनन्तरं पुत्रस्य विवा
हः कार्यः इत्यर्थः ॥ पदार्थ ... ॥ मरणं
मरणं न कार्यम् मरणे नैव मरणं न मु ॥
... सोदरयोः ... सहोदर कन्यके
... हे ॥ और ...

स्मेवरणा सतोदृ वं न्याद्व यम पिन देयो ॥ ए
कानदृर के: सुगी तेवणके ने बोला । इदना ॥
॥ ७ओदम पद्र २७ ३ प २ सा ट का वी नत दे बे ति है
न स्मृ वेध वे य या के न्यो ह्री चते ॥ नदमत
पि नम्र छा र के न्या दे यसेवं पुरा न ५ ५ र ३ प
हातो है । को न दे क्षमा प्राप्ति
पद्र साटाम्र ना कोभगिनी कान्
चे ॥ ७ओर पहु नी तिन्हे ॥ सो
वम्ह ७ मह्राध्ये बर्षा द्ये पिर
प्यि ॥ पना नार दे ॥ विवा
नां पूजा सादे धनोर प दि म
पैसा नै का ध्या वा मवे
दे ॥ ७ ओर २ ३ भ विवाहा मे मे
मे के या ओ डु के या
न काप्यो ॥ मंगल काप्पीमे ७ मंगल न हो
मंगलते नाप्य मंगल लम्हु ॥ ७ प्रमङ्
बार न ॥ मंगल ते नाप्प मंगल लम्हु ॥ ७ प्रमङ्
तं भाङ्म्रु ॥ ७ मलम्रु ॥ ७ प्रवनिवा र का पे ष
नक्षत्र मास का विचार ति० रो० उत्रा ३
ग म० मघा० ७ मन० ह० स० ॥ पहविदा
रे० मृ० स्वा० ७ मा मा ८
ह के नक्षत्र है ॥ मा० घ० फा० वै० ज्ये० ७ मा ब ८ प्र दी १०५
पिछु ने पित्र ता वे श्रु चे ॥ ७ मा बा ८
फो पर तकाल कि ०
धत के न हीं ते ने पो र प ति में मार्ज

अथ विवाहे दश महा दोषाः ॥ तत्र पात
प्रति २ वेध ३ ॥ जामित्र ४ [illegible]
एकार्गल [illegible] उपग्रह [illegible]
दग्धा तिथि [illegible]
[illegible] तत्र दोष [illegible]
और पात [illegible]
[illegible] वर्जित [illegible]
[illegible] है ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
का है ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] जामित्र [illegible]
[illegible]
[illegible] का है ॥ [illegible]

और भी पातका चरण भेद से परिला

[illegible] लिं० है ॥ पातोपग्रहणं तात्स्वनेष्टं

[illegible] ध्रौः खेट पत्सम: ॥ पाते उपग्रहे च

[illegible] विपर्यासि [illegible] स्पार्ध्र संख्य चरण

[illegible] मस्य नचात्रे स्य वज्यौ नान्य: ॥ स्पष्टोप

[illegible] मे पाद [illegible] सम [illegible] करण [illegible] खावलि

[illegible] चंद्र [illegible] स्य वज्यै ॥ [illegible] स्वर्थ: ॥ पहपा

[illegible] के लिखे है ॥ अब पातकाल दोष

लिखते है ॥ [illegible] काल दो [illegible] तो पह [illegible] लिं०

[illegible] ॥ [illegible] ९ वैं [illegible] ति [illegible] ८ ४ २

[illegible] पीति पात [illegible] योगा [illegible]

[illegible] पात [illegible] तिलं स्यात ॥ [illegible]

[illegible] कृतं [illegible] पर

७१ [illegible] पत्र २३० पर

कारन [illegible] विवाह प्र० मे पत्र [illegible]

लं ग्रा० [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] चतीरति ॥ यह श्लोक [illegible]

[illegible] पत्र २२० पर दु

[illegible] पात [illegible]

[illegible] ॥ प्रश्न [illegible] ॥ श्री

प्रथमभृति॥ जिस जन्म मे चन्द्रमा होय होवे
और बी कोइ ग्रह होवे तो भृति दो न होवे
इस भृति का परिहार मन्त्र जाप और पी
दान धारा मे पत्र रहे तो परिहार है
मेद परिहार॥ भृति दो का भाव है दे
जनित्र स्थ चन्द्र मनै पत्र सरिस
रहे ॥ भृति ग्रंथ ने पत्र रहे पर
भृति के परिहार और गीता के ॥ जिस रा
[illegible] चन्द्रमा होय पाँच मे [illegible]
[illegible] होय [illegible] ग्रह होय तो [illegible] मे है
जोग [illegible] और [illegible] चन्द्रमा
होतो भृति दो न [illegible]
[illegible] का [illegible]
[illegible] का होवा मित्र दृष्टि होय [illegible] चन्द्रमा
केन्द्र मे स्थित होय तो भृति [illegible] होता
भृति के परिहार [illegible]
[illegible] वेध [illegible]
[illegible] जितो॥ माघ श्री शुक्ल फाल्गु॥
[illegible] वेध [illegible]

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ विवाहसार की
लिख्यते ॥ तत्रादौ मेलकाध्यायं व्याख्यास्या
मः मुहूर्तचिन्तामणौ पियूषधारायां अथ
विवाहप्रकरणे श्लोक २१ ॥ वर्णो वश्यं
तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम् ॥ ग
णमैत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः
षडष्टक देखने तिसमें प्रथम तो
षडष्टक राशि में लग्न वर कन्या का दे
खना वर कि राशि से कन्या कि राशि
षष्ठ ६ स्थान होय ॥ अष्टम ८ स्थान
होय प्रथम वा कन्या कि राशि से वर कि
राशि ६ वा ८ होतो मृत्युकर ताहम
उक्तंच षडाष्टके भवेन्मृत्युः ॥ षट्
षडाष्टक वर्जितं ॥ "मृत्युः षडाष्टके ज्ञेयो
ऽपत्यहानिर्नवात्मजे ५ द्विर्द्वादशे नि
र्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत ॥
वर कन्या कि परस्पर ६।८।राशि
होतो मृत्युकारक है ॥ जो वर की
राशि से कन्या कि राशि ।५।९। हो
प्रथम वा कन्या कि राशि से वर कि

जो देवता का और मनुष्य का हो तो श्रेष्ठ है

राशि गा ६।९ ग हो तो सन्तान कि हानि
करने वाला है और वर कि राशि
से कन्या कि राशि २।१२ हो तो श्रे
ष्ठ वा कन्या कि राशि से वर कि राशि
२।१२ हो तो निश्चे ही नता कार क
होता है धन नहि होता है और
स्थान पर स्पष्ट है इति राशि
कूट विचार: प्रथम गण विचार:
वर कन्या का पर स्पर आपस में जो
कन्या का गण राक्षस का हो और वर
का मनुष्य का हो तो मृत्यु कारक
होता है जो वर को राक्षस का हो और
कन्या का मनुष्य का हो तब भी मृ
त्यु कारक होता है सो यह कोई ठीक न
हि है और दोनों का एक गण हो तो
श्रेष्ठ है जो देवता राक्षस का हो
तब भी का मध्यम है ~~मध्य है~~ श्रेष्ठ है इति
गण विचार: प्रथम योनि विचा
र: जो कन्या का वर का ... हो ते

ओर वर कन्या दुः हो तो अछ नहि
है ओर जो क्षत्रीय वैस्य का हो तब
भी अछ नहि है ओर सब अछे हैं इति
वर्णविचारः ॥ अथ नाडीविचारः ॥ जो
वर कंन्याकि एक नाडी हो तो अछ नहि
है वर कंन्याकि मध्य नाडी तो बहुत नि
गंतनाडी भी अछ नहि
षेध है ॥ ओर वश्य ॥ तारा ॥ ग्रह मैत्रि
वर्ग ॥ जो निगाई है का विचार कोई कि
देखते है कोई नहि ॥ ओर शीघ्रबोध
मे नाडी दोष विप्राणां ... लि
ख लिखा है सो यह बात जो सो है
ज है सो मानने देखते नाम ग्रह का
बड बडे ग्रंथ का यह नहीं है ॥
ओर मंड लोक कोग भी लगे
व जपातालें इस श्लोक से देखते
ना ओर पालित जपदासो हूँ इस
श्लोक से सूक्ष्म मंगल देखते
ना ... अब के मदिक योग देखना
इसके देखने की रीति यह 18

का द्वादश का हो अथवा वैश्य का हो तो भी शुभ है अशुभ नहीं है॥ जो कंन्या का जाल [illegible] का हो और वर का

जो वर कि जन्म कुंडली मे जीस
राशी का चंद्रमा हो उस चंद्रमा
कि राशी से २।१२। स्थान पर कोइ
ग्रह ना हो उसको मैं मुद्रिक या
ग कहते है ये के मोद कमीवर
कंन्या के मिलान मे देखता यह
योग निर्धन दरिद्र कर नेवा
ला है इन्दु कवर कोल श्री:
को भीन कर देता है॥१॥ अब
मेल का ध्यान से उपरंत बो गद्द
न सगाई का मुहूर्त वर के वरी का
टिके का मुहूर्त लिखते है तथा
च श्लोक: धर शिाद वोड्य नाकं
न्यका सोदर: श्रम दिन गीतना
धादि भि: संपुत: वर वृतिं व
स्त्रय [illegible] पनीता दिनाद्य वपुते
वीहु पूर्वा त्रये श्चरेत॥ मा व
कंन्या का १६ से हित वा कंन्या
का भाई श्रम दिन के विषे

द्वि पं का हो तो मध्यम है [illegible] का तो मेल हो वी जाता है शुभ है॥

जो वर का वृष राशि का हो [illegible] और कंन्या [illegible] का हो कंन्या का मकर [illegible] का हो [illegible]

चन्द्रवार बुधवार गुरुवार शुक्र
वार इन्ह शुभ वारि नाके विषे
और उत्रा तीनो और रोहिणी
नक्षत्र हैं और कृ बहु कृतिका
है और पूर्वा तीनों हैं औ इन्ह मे
कर का वर्ण करना और कूर वा
र रिक्ता तिथी: वर्जदेनी और
चौथ ४।९।१४। वर्जमाना
है। यह वर के वर्ण का मुहूर्त देखना लि
खा है। बंकर वर्ण है अबने वार कंन्या
का वर्ण करना पहला शुभ
वार है रिक्ता तिथी ना हो विवा
ह के नक्षत्र हों तब कंन्या का वर्ण क
रना यह वर कंन्या का वर्ण ह
विचार देखने का क्रम। प्रथम वि
वाह के नक्षत्र देखने रोहिणी उत्तररे
वती। इस श्लोक से फेर विवाह के
मास देखने माघ फाल्गुण वै 19
शाख ज्येष्ठ। आषाढ मार्गशीर्ष
ये मास सबसे श्रेष्ठ हैं॥

और चैत्र मे जो मेष की संक्रान्ति
हो जाव तो विवाह कर लेना
जो कार्तिक मे वृश्चिक की सं
क्रान्ति हो जाव तो विवाह क
र लेना जो पौष मे मकर
कि संक्रान्ति हो जाव तो वि
वाह कर लेना और माह
वर्जित है आषाढ मे जो ४
कर्क की संक्रान्ति हो तो वि
वाह नहि करना विवाह
के नक्षत्र मास देख क
र कन्या वर को सूर्य्य बल कं
न्या को तस बल देखना दो
नो का चंद्रमा का बल देख
ना वा ध्रुवा धवक श्लोक
से देखना ॥ याज्ञवल्क्य से
देखना ॥ अथ दशदोष नाम
भि - न्नर: ॥ प्रथम लत्ता दोष सो माल
वदेश मे देखना ॥ २ सर पात दोष

निःशेषः सर्व्वः [illegible]

भति जामित्र भपगस्त णा।। व्यवस्थ
तिसके देखने का विचार यह है।। सूर्य भुक्त
भनक्षत्र गये रखपात विशेय ते मघा श्लेषा
चित्रा चसानुराधा रेवति।। भाषा
टीका जिस नक्षत्र मे सूर्य हो उहीं नक्षत्रों
विवाह का नक्षत्र हो यदि ते, होनक्षत्र
विवाह का हो जावे तो पात दोष ल
गजाता है।। मघा।। श्लेषा।। चित्रा।। अनु
राधा।। रेवति।। श्रवण।। यह छ न
क्षत्र पात के हैं इन नक्षत्रों के सूर्य
के संयोग से छ प्रकार के पात कहे
हैं प्रथम सूर्य के नक्षत्र से २७ रेखा
खींचनी चाहिये नक्षत्र पात कह
ते हैं बाडे करिये कर अश्विनी न
क्षत्र को आदि लेकर विवाह
नक्षत्र तक गिने ये जो बाडे नक्ष
त्र में जिन तिथि पूर्ण होवें पात दोष
लगेगा इति पात चक्रम्।।

[illegible]

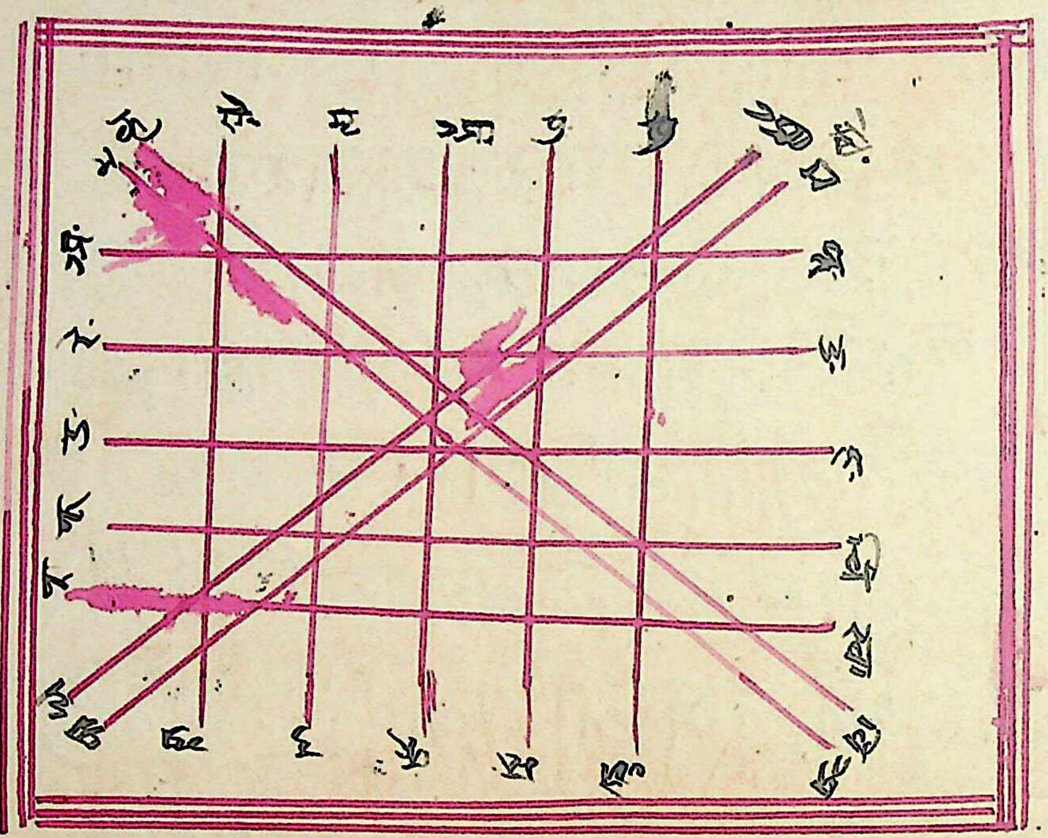
श्रा. ध. शा. पू. उ. रे. इन योगों
S । । । । । केअंत के वि
षको विवाह न छोड़ना
हो तो पात दोष
जानना

[illegible]

हर्षण वैधृति साध्य व्यतीपात
गंड शूल योगानामंत्य पादे
न चेत्पातेन निपातितं त
स्यात् १ ब.ह.प्र.चि. मार्तिकश्लोक
है॥ जिसदिन का साहा देखणा
हो उसदिन जो इन योगों मे
से कोई सा योग हो उसी दिन
विवाह न चाहिए इन योगों के अं
तका न छोड़ना हो तो उस साहे
मे पात दोष लग जावेगा सो
पात दोष कुरुदेश में वर्जित है
जो कुरुदेश का लडका हो या
लडकी हो तो पातदोष देखते नहीं
यही पात देखने की रीति मुख्य है॥ जो पहले
लिखे उसमे [illegible]

अथ भृतिदोषविचारः ॥ यत्र गृहे भवेत्कृ
ष्ठो इस श्लोकसे देखना ॥ प्रथम ॥ जि
स घर मे चंद्रमा हो उस घर मे और
कोई ग्रह हो भुक्तके विना तन भृति
दोष लग जाता है भृतिदोष भवे
ष्ठोइ ॥ भृति दोष गौड़ बंगाले मे
लगता है यह वाक्य मुहूर्त चिन्ता
मणि विवाह प्रकरणका है ॥ इति भृ
ति दोषः ॥ अथ [illegible] वेध विचा
रः ॥ अश्विनी [illegible] पूर्वा फाल्गुन्यो
भरणी चान्तराधौ इस वाक्य
से देखना ॥ अथ पञ्चशलाका
वेध चक्रम ॥ इस चक्र से विना
ह मे वेध दोष देखना जो ह मे
ध दोष सर्व [illegible] दे शमे [illegible]
निषेध है पीछ वीध मे लिखा है

॥ अथ पञ्चशलाकाचक्रम्



॥ अश्विनी पूर्वाफाल्गुनीका वेध
जो अश्विनीपर कोई ग्रह हो तब वे
ध जानना जो पूर्वाफाल्गुनीपर को
ई ग्रह हो तब भी वेध जानना जो
अश्विनी और पूर्वाफाल्गुनीपर
दूर दोनों नक्षत्रोंपर कोई ग्रह हो एक नक्षत्र पर
हो पर तब भी वेध जानना और इसी
प्रकार सम्पूर्ण नक्षत्रों का विचार दे
खलेना ॥ इति वेधचक्र विचार:

अथ यामित्र दोष विचार:॥ यह दोष
यामुन देश में लगता है॥ अब
बुध पञ्चक यामित्र दोष लिखते हैं
धार्या तिथिर्मासदलाङ्कवेदः संक्रांति
तो यातदिनैश्च योज्या: ग्रहै र्विभक्ता
यदि पञ्च शेषो रोगाग्नि राजे नृप
चौर मृत्यु:॥ अर्थ जितने गये सं
क्रान्ति के गते हुए दिन गये हैं उन्ह
मे तिथि: नाम १५ का अंक जोड
देना और नाम ९ नव का भाग देना
जो ५ पांच शेष बचै तो रोग वा
ण जानना वोह रोग बाण व्रत में लग
ता है फेर जितने संक्रान्ति के गुजराग
ये दिन उन्हमे मास नाम १२ वा १६ का
अंक जोडना उन्हमे ९ नव का भा
ग देना जो ५ पांच शेष बचैं तो अ
ग्नि बाण जानना वोह अग्नि बाण
जद मजे घर मे लगता है॥

जितने संक्रांति के ७ भाग गये हों
उन्ह मे १०८ का को ७ अंक जोड़ना
के २५ नव का भाग देना जो
पूर्ण वचे शेष नव चें तो न्यव काल
लगता है गो हलाहल जाके
तिलक मे लगता है॥ जितने
संक्रांति के ७ भाग गये हैं उन्ह मे ८
आठ को ७ अंक जोड़ दे ने २५ न
नव का भाग दे जो पूर्ण वचे शेष
नचें तो चोर काल लगता है।
सो यात्रा मे वर्जित है॥
जितने संक्रांति के ७ [illegible]
भाग गये हैं उन्ह मे ४ दशाव
४ चार को ७ अंक जोड़ना
२५ नव का भाग देना जोप
शेष नव चे तो मृत्यु काल
लगता है सो मृत्यु काल विवाह
मे व वर्जित है

23

अथ वाणदेवविचारः॥ विष्णुध

धारणाम् ज्योतिः प्रकाशे पत्र

रईपूर्णान्ट पाखंड राज सेवा या

मूग्रह गोप ऽग्नि पंचकम्

पाने [illegible] चौरं व्रते रंगं त्यजे

[illegible] त्रं कर ग्रह ॥ इति ॥

केचिद् देवं वाङ्माहुः ॥ व्रतवि

र्जे पे ध्रुवं ग्रह गोप ऽग्नि पं

चकम् पाताताप राज चौर

रवो विना हे स्रतिपंचकम्॥

इति वाणदेवविचारः ॥ एकार्ज

लदेव का पूर्णार मेल गता है॥

अथ उपग्रहदेवविचारः-

[illegible] व. ज्योति. सार॥ प्राए

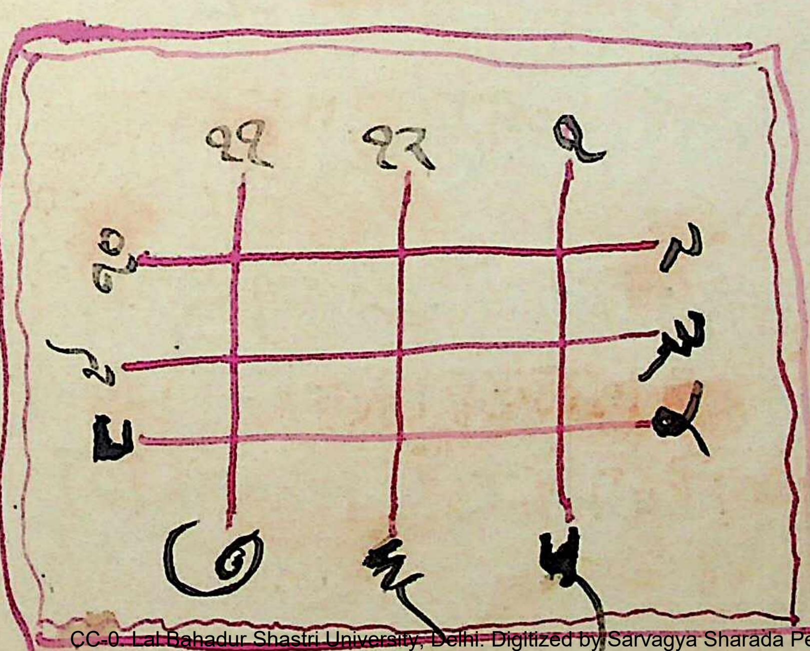
सूदिक [illegible] नगातिन्ट त्यक्तिपि

र्धति [illegible] कृते [illegible] पंच उपग्र

ह सर्वे भ तो [illegible] तारा [illegible]

देखो कुसुवालिकानाम॥१॥
टीका सूर्य के नक्षत्र से चंद्र
मा के नक्षत्र तक गिने जो
५॥८॥१०॥१४॥७॥१९॥१५॥
१८॥२१॥२२॥२३॥२४॥२५॥
इतने नक्षत्र हें य तो उपग्रह
दोष लग जाता है सो कुसदो
ने दोष में और वालिका दो
ष में लगता है अन्य नक्षत्र नहिं
लगता है यह वाक्य ह
ज्योतिस्सार का है॥ इति उप
ग्रह दोष विचार॥ सूर्य के न
क्षत्र से जो विवाह नक्षत्र ५।
८।१०।१८।७।१६।१५।१८।२१।२२।
२३।२४।२५ इतने को कोई गि
नती पर आजावे तो उपग्रह
लग जाता है

॥अथ क्रान्तिसाम्यदोषविचारः॥
मीनः कन्या कयायुक्तो मेषः सिंह
मसंगतः इस श्लोकसे देखनामी
नका सूर्य है और कन्याका चं
द्रमा है [illegible] ॥अथवा कन्याका
सूर्य है और मीनका चंद्रमा
होतब भी क्रान्तिसाम्य दोष जा
नना यह क्रान्तिसाम्य दोष सूर्य
चंद्रमासे इदि देखना॥ इति क्रांति
साम्य विचारः॥
अथ क्रांतिसाम्य चक्रम्



अथ दग्धतिथि दोष विचारः॥

~~मीन~~ मीने चापे द्वितीया

च इस श्लोक से देखनी॥

मीन की और धन की संज्ञा

तिसमे द्वितीया दग्धा तिथि है

ति है इस प्रकार देख लेनी

इति दग्धा दोष विचारः॥

अथ द्विरागमन मुहूर्त॥ ~~मुहूर्त~~

मुहूर्तचिन्तामणौ विवाह धाम

नाम॥ चरेदथौजहायने घटा

लिमेषगे रवौ रविज्यशुद्धि

योगतः शुभग्रहस्य वासरे

नृयुग्ममीनकन्यकातुला

वृषे विलग्नके द्विरागमं ल

घुध्रुवे चरेऽस्विभे मृदू

डुभिः॥ अर्थ विषमे घट

धात्वप्रत्यमिति" भाषाविषमनं बेहे २।३।५।७।४।२२" इन्हमें हिरागमन करना" कुम्भका वृश्चिकका मेषका इन्हकों सूर्य्य हो तो हिरागमन करना" वरकों सूर्य्य शुभ हो कंन्याकों गुरु शुभ हो वह वरकंन्याकों सूर्य्य गुरु ४।८।१२ ना हो तो हिरागमन करना शुभवार है चं. गु. बु. शु. यह वार हे कंन्या मिथुन मीन तुला वृष" यह लग्न हे लघुसंज्ञक में त्रहस्त" अश्विनी" पुष्य" अभिजित" श्रवण" धनिष्ठा यह लघु है" उत्तरा तीनों और रोहिणी यह नक्षत्र ध्रुव संज्ञक है मृगशिर" रेवती" चित्रा" अनुराधा स्वाति" मूल ज्येष्ठा आर्द्रा ... नक्षत्र

पुनर्वसु [illegible] नक्षत्रों में द्विप

गमन करना और वोह तिनों ति

थि ४।९।१४। नाहीं चूदसी नाहों अ

मावस्या ना हो मंगलवार शनि

वार रविवार मध्यम है इति

पति के घर आवने में सूर्य स

न्मुख दहिने सुभ होता नहीं

और जो सूर्य अवश्य

गाहो तो अश्विनी नक्षत्रों में आ

जाना यह ज्योतिषाचार्य का विचार

है अश्विनी नक्षत्र यह है श्लोक

ज्योतिस्सार ॥ रेवत्यादि मृगांत

ते नव पावति क्षति चंद्र माता

न [illegible] प्रवेशने [illegible]

पुनर्भवनीत ॥ रेवती [illegible] अश्वि

नी भरणी कृतिका रोहिणी मृग

शिर ये [illegible] नव नक्षत्र हैं

इति द्विरागमनप्रकृते: ॥ अथ अगस्त्ये
रवृहस्पति के ॥ अस्त मे शुभ कोर्य नहि करणा शु
क्र के सन्मुख दक्षिण के निषेध का श्लोक ॥ द्वि
रागमन प्रकर्णे श्लोक २ ॥ इत्येवं जो रविभिप्राव
दक्षिणे भदि स्यात् दृच्छ पुनर्दिपापं गर्भिणी
न वो गुवालस्थ्रेद् जातिविपद्यते न वोढुर्वे
बंध्या भवति चैव गर्भिणी त्वगर्भा ॥२॥
जो शुक्र सन्मुख दक्षिण है तो स्त्री पांव को न दिजा
ना जो चलि जावे तो जो वो हस्त्री बालक
वालि है तो उसका बालक नष्ट हो जावे जो
गर्भवति है तो गर्भ नष्ट हो जावे वंध्या हो जा
वे ॥ नगर प्रवेश विवाह पद्वे कर पीड मे
विबुधतीर्थयात्रयो: नृपपीडने न व वध्
गवेशे गतिभार्गवो भवति दोष कृत् न हि ॥२
भाषाटीका जो स्त्री ॥ प्रवेने नगर ग्राम किम् प्र
वेने नगर ग्राम मे दि विवाह दि है उसको
शुक्र सन्मुख दहिने नहि लगता ॥ और उप
द्रव मे दुर्भिक्ष मे विवाह मे तीर्थयात्रा मे
जयात्रा द्ववरी के विना ॥ और राजा के सका
शते जो दंड है ॥ कै दृति मिस मे ॥ और [redacted]
[redacted] तिसके प्रव
शके विष सन्मुख दहिने ... को दोष न

हिं लगता है॥ पितृजेशे चेत्कुचसंभवः [redacted] ली

लांतदोषः गतिभ्रसंभवः भवत्वं

जाते वत्सवसिष्ठकश्यपात्री गांभ

रद्वाजभृग्वैः कुलेन दोषः॥४॥ भाषा

टीका जो पिता के घर में द्विरागमन

से पहिले कन्या के कुच होते आवें

तो भी उसका सम्बन्ध दहिने दोष

नहिं लगता है और जो पिता के

घरमें [redacted]तवती होजावे

तो भी उसका दोष नहिं लगता है॥

जो आलगाभरतः और अङ्गिरा॥

और वत्स॥ वसिष्ठ॥ कश्यप॥

अत्रिः॥ भारद्वाज इत्य गोत्र वा

लों को भी उनका सम्बन्ध दहिने

दोष नहिं लगता है इति द्विरागम

न प्रकरण समाप्तम्॥ ४॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ यज्ञोपवीत मुहूर्तः ॥
गीर्वाणांबुप्रतिष्ठापरिणयदहनाधान
चौलोपवीतलोणीबालाभिषेकोद
वसितविपूनैनैवयाम्यायनेस्यात्
नोवावाल्यास्तवार्द्धेसुरगुरुसित
योर्नैवकेतूदयेस्यात्पक्षंवार्ध
चकेचित्त्रिदिनमपरेपांचदिनां
तकुत्रं ॥ भाषाटीका ॥ देवतानाजलकी
प्रतिष्ठाकूपप्रतिष्ठातडागप्रतिष्ठामठ
प्रतिष्ठागृहप्रतिष्ठायज्ञोपवीतगृह
प्रवेशचौलनाममुंडनकाहैप्रथम
बालेकेकाऔरकरावनाराजाका
तिलकइतनेकामददक्षिणायनमेनहिं
करणेउत्तरायणमेकरणे ॥ अथचू
डाकर्ममुहूर्तः ॥ चूडावर्षात्तृतीया
त्प्रभवति विषमेऽष्टार्करिक्ता
द्यषष्ठीपर्वोनाहेविचैत्रोदग
यनसमयेज्ञेंदुशुक्रेज्यकानां

नाम धारे लग्नां धा णो क्का स्वमनि
धनतेनो ने धने शुद्धिवके धा को
पते विमै गे हे दचालब मैर
पबदू ट जिस्त पावे: ॥भाषाटीका
बालक का चूडाकर्म मुंडन तीसरे
मविषमवर्ष में करना चाहिये मनु
नाम धमवर्ष उत्तम इस वावपमे
पहिला वर्ष और वृ चूडावर्षात
इत्यवाक्यसे तीसरे पांचवें वर्षमे
सप्तम वर्षमे मुंडन करना विष
मवर्ष मे लिखा है ॥ और अष्ट
मी चतुर्दशी और रिक्ता तिथि ४।९।
१४ [illegible] प्रतिपदा षष्ठि ॥ और प
र्णपूर्णिमा अमावास्या संक्रांति
इन तिथियों को वर्ज करे ॥ औ
र तिथियों में मुंडन करना श्रेष्ठ
लिखा है ॥२॥३॥५॥७॥१०॥११॥१३॥

यह तिथि मुंडन में कहा मे श्रेष्ठ है
और चैत्र को वर्ज करके उत्तरायण
में करना और चंद्रवार बुधवार शुक्र
वार गुरुवार इन वारों के विषे क
रना और जन्म का मास जन्म कि ति
थि जन्म का वार यह तीन करवाने
मे वर्ज देने ॥ कर्क ॥ मिथुन ॥ वृष ॥
कन्या ॥ तुल ॥ धन ॥ मीन ॥ इन ल
ग्नो में मुंडन श्रेष्ठ है और अपनि
जन्म राशि से अष्टम लग्न मे कोई ग्रह
ना हो शुक्र के बिना ॥ उक्तं च पराश
रः ॥ अष्टमस्था ग्रहाः सर्वे नेष्टाः शु
क्र विवर्जिताः शुक्रश्च निधने दौ
रे सर्वसंपत्करः क्षिप्रोः ॥ इति व०च
नात् ॥ ज्येष्ठा ॥ मृगशिर ॥ रेवती ॥
चित्रा ॥ पुनर्वसु ॥ पुष्य ॥ अश्विनी ॥
श्रवणा ॥ धनिष्ठा ॥ शतभिषा ॥ हस्त ॥
स्वाति ॥ यह नक्षत्र मुंडन मे श्रेष्ठ है ।

जिसलग्नमें ऽनकरे तिसते ११

१।३।। इन स्थानों में पापग्रह हूं

और शुभग्रह केंद्र त्रिकोण में हों।।।।

इति चन्द्र मुहूर्तः।।।।ऽअथ कर्णवेधनम्

विप्राणां व्रतबंधनं निगदितं गर्भाज्जनै

र्वाष्टमे वर्षे वाप्यथ पंचमे क्षितिभुजां

षष्ठे तथैकादशे वैश्यानां पुनरष्टमे

ऽप्यथ पुनः स्याद्द्वादशे वत्सरे का

लेऽथ द्विगुणे गते निगदितं गौ

णं तदाहुर्बुधाः।। भाषाटीका

ब्राह्मणों का यज्ञोपवीत गर्भ से

अष्टम वर्ष में अथवा जन्म से

अष्टम वर्ष में करना श्रेष्ठ लि

खा है २ और क्षत्रीयों का एका

दश वर्ष में करना श्रेष्ठ है और

र वैश्यों का द्वादश वर्ष में करना

श्रेष्ठ है प[illegible]द्वमादः।।अ

धानादष्टमेवर्षे जन्मतो वागर्भजन्मनाम ए
त्रामेकादशे मौंजिबंधनम् द्वादशे विशा
म् ॥ इति मुख्यकालः ॥ ० अथ गौण
कालः ॥ ब्राह्मणस्य षोडशवर्षपर्यंतं गौ
णकालः ॥ क्षत्रियस्य द्वाविंशतिवर्षपर्य
र्यंतं गौणकालः ॥ वैश्यस्य चतुर्विं
शतिवर्षपर्यंतं गौणकालः ॥ वसंते
विजाशांगे [illegible] राज्ञां शरदि विशाम्
[illegible] उदगयने शस्तः ॥ विप्राणामुपन
यनम् वसंतसमये धराधि [illegible] धि
नाथानाम् [illegible] ग्रीष्मतौ शरदि विशां
माघः साधारणम् [illegible] माघाद्याः ॥ कश्य
पोपि ॥ ऋतौ वसंते विप्राणां ग्रीष्मे राज्ञां
शरद्यथ विशां मुख्यं च सर्वेषां द्विजा
नाम् चोपनायनम् ॥ साधारणं च
मासेषु माघादिषु च पञ्चसु सा[illegible]
माघे दुर्विलापीलाह्यतःकालान्नेच ६ ८
व्रतः चैत्रे भवति मेधावी नैषाखेका

।।। विदे भवेत् ॥ ज्येष्ठे तु अग्रह नोति तस्मा
षाढे अग्रहणे अभवेत ॥ मार्गशीर्षे भवेदं भ
वः क्षेषे दुःखमवाप्नुयात् ॥१॥ आषाढमे
मिथुन की संक्रांति को ग्रहण है कर्क की को
नहीं है॥ और चैत्र मे मीन की संक्रांति
मे यज्ञोपवीत कर लेना ये चालिस्वा है॥
चैत्रे मीन गते भानौ व्रतस्योपनयनं शु
भम् इति वचनात्॥ और जलग्रह
मे यज्ञोपवीत नहीं देगा॥ जयोदशपाद्य
चत्वारि सप्तम्यादि त्रय मेव चतुर्दशी
चैव कतः प्रोक्ता अष्टावेते गलग्रहाः ॥१॥
अर्थ १३।१४।१५।१। इति तिथि और ७।८
।९। और राका चतुर्दशी ४ इह तिथि वें
वा नाम मजलग्रह है इनमे यज्ञोपवी
त नहीं देगा॥ विधुंतु नावमंते न कुम
लमपचौ गलेग्रहे अपराह्णे चोपनीतः
पुनः संस्कारमर्हति ॥१॥ वसतऋतु वे
वीना और कृष्णपक्ष मे और जलग्रह तिथि
मे और अपराह्ण मे उपनयन नहीं देगा॥

सर्वदेवेषु पूर्वान्हे सर्वं स्यादुपनायनम्
मध्यान्हे मध्यमं प्रोक्तमपरान्हे च गर्हि
तम् ॥ पूर्वान्ह मे १२ बजे से पहिले
उपनयन करणा श्रेष्ठ है उपरांत म
ध्यम ने ष्ठ है ॥ क्षिप्रध्रुवाहि चर मूल मृ
दु त्रिपूर्वा रौद्रेऽर्के विदुसितेंदु दि
ने व्रतं सत्तद्वितीयाशक दूरविदि ... कुजमि
ते तिथौ च कृष्णादि मत्रिलव ... के उवि
न चापरान्हे ॥ भाषाटीका ॥ क्षिप्र नक्षत्र अश्वि
नी पुष्य हस्त यह है इन मे ॥ और ध्रुव उत्तरा तीनों
रोहिणी ॥ मृदु नाम नक्षत्र चर नक्षत्र श्रवण
धनिष्ठा शतभिष पुनर्वसु स्वाति मूल यह हैं इ
न मे ॥ और मृदु नक्षत्र मृगशिर रेवती
चित्रा ॥ अनुराधा यह हैं इन मे तीनों पूर्वा
और रौद्र नाम आर्द्रा इन मे उपनयन करना
श्रेष्ठ है यह यज्ञोपवीत के नक्षत्र हैं ॥ सूर्य के
नाम रविवार बुधवार गुरुवार शुक्रवार
चंद्रवार इन वारों के बिषे उपनयन कर
ना श्रेष्ठ है शुभ है ॥ इति वारतीनां ...

पञ्चमी एकादशी त्रयदशी दशमी इन
तिथियों के विषे उपनयन शुभ
है शुक्ल पक्ष मे उपनयन करना और
कृष्णपक्ष की पञ्चमी तक [illegible] करले
ना शुभ है और अपराह्न मे नहिं करना
गलग्रह मे नहिं करना और शिरलग्न
मे और रविस्वभाव लग्न मे उपनयन
करना शुभ है [illegible] जिस लग्न मे उप
नयन करे उस लग्न से पञ्चमघर मे
कोई शुभ अशुभ ग्रह ना हो अष्टमी
त पञ्चम घर शुद्ध हो तो उत्तम त्रिका
ण ४ मे शुद्धि हों जिसे केन्द्र पञ्च
मे वि ना हो सप्तम शुद्धि [illegible] प्रवेश
चतुर्थ कर्म ॥१॥ और उपनयन
लग्न मे केन्द्र त्रिकोण मे शुभ ग्रह हों तो
उपनयन करना और १२ गुणोदय दिन
के पक्ष में उपनयन विवाह और शुभ का
म नहिं करना और आदित्य यो
ग मे भी शुभ कार्य नहिं करना और

[illegible]

गुर्वादित्य किसको कहते हैं सो लिखते हैं ३।

गुरु राशौ गजस्थे सूर्ये राशौ यदा गुरु

गुर्वादित्य संचितं शुभमेकर्म लीवर्जितः

यह मुहूर्त मार्तण्ड का वाक्य है ।। और सिं

ह के बृहस्पति में और मकर के बृहस्पति

में शुभ कार्य नहिं हीं करना और जो गु

रु वक्री हो जावे तब शुभ कर्म नहिं

करना उक्तं च मुहूर्त चिन्तामणौ अस्ते

वर्ज्यं सिंह नक्रस्थे जीवे वक्रि इति।। बाबा

रामदत्त जी इस श्लोक से जो शुभ कर्म कहे हैं

सो गुरु के और गुरु के अस्त में नहिं करने

इति यज्ञोपवीत मुहूर्तः।। वज्र्यं वर्ज्यं० यह श्लोक

और बाबा रामदत्त जी ने [illegible] यह श्लोक

शुभाशुभ प्रकरण को है मु० चिन्तामणि का।।

एकराशि: गतौ सूर्यः जीवौ स्यातां यदा पुनः

व्रतबन्धाविवाहादि शुभ कर्माऽखिलं

त्यजेत् यह गुर्वादित्य दोष मुख्य है

पीयूषधारा टी० में लिखा है [illegible] लिखे हैं

।और हलदातवानहाथलगावना कदापि
चढावना। इसके मुहूर्तों मे केवल विवाह
नक्षत्रमात्र को देखलेना।और चौथे
आठवें बारमें चंद्रमा नाहीं।और दग्धा
तिथि न होवे।और स्थिर लग्न मे।और वि
वाह से ११ दिन पहिले ~~सीद~~ ~~वा नौ दिन~~ पहि
~~ले~~ वा ७ दिन पहिले वा ५ दिन बाद हलद
लगावना वा न लगाना भी है।। के दिनों
मे लग्न शुभ है।और चंद्रमा का कुछ विशेष
विचार नहि करना। उक्तं च बृहद्ज्योतिःसारे मु
हूर्तमार्तण्डे षष्ठि विवाह के तैल लगा
विवाह मे विलोकनैन वर्लहि मुहूर्तः।
नवः त्रिषष्ठे हि विवाह पूर्वं तो नवमी को
मंडप तेल में नम्।।१।। भाषा विवाह से ३।५।६।९
दिन पहिले हलदात बान कडाहि वह कोई का
म नहि करना।। इति तैलमर्दन मुहूर्तः।।

वरको सूर्यका बल कन्या को गुरु का बल दो
नो को चंद्रमा का बल विवाह मे देखना ॥८।४।
१२॥ सूर्य वर को नेष्ट है ॥१॥२॥५॥७॥९॥ जो
वर को सूर्य हो तो पूजा का जानना ॥११॥३॥
६॥१०॥ यह सूर्य वर को शुभ है और कई
सी आचार्य के मत मे मुहूर्त चिन्तामणि मे यह
लिखा है कि जन्म का सूर्य नेष्ट है ॥स्थानं
जन्मकि त्रिनाथा वेद्ध न कर्मः ॥ इसवा
क्य से ॥ अब गुरु वृहस्पतिः दूसरे पां
चवें सातवें नवम कन्या को शुभ है
और जन्म का ३॥६॥१०॥ कन्या को
पूजा का है ग्रह ॥४।८।१२। अशुभ
है नेष्ट है और म॰ चि॰ मणि मे लि
खा है जो उच्च का ग्रह व मित्र राशि
का हो तो ४।८।१२। का दोष नहि हैं।
और निर्णयसिन्धुः मे लिखा है॥
यदाह लल्लः॥ द्वादशाष्टम चतुर्थे
जन्मनि यद्यपि... तौ वेज्याप्रेपा

गा॥ त्वहते जीवे वैधव्यं माप्नोति॥१
सर्वत्रापि शुभं दद्यात् द्वादशाब्दे
त्परं गुरुः॥२॥ भाषा टीका॥१२॥१७
४॥१॥६॥८॥३॥ औ इन्ह स्थान पर
वृहस्पति कन्या को हो विवाह मे
तव वैधव्य योग को करता है॥ औ
र द्वादश १२ वर्ष से उपरंत गुरु कं
न्या को विवाह मे शुभ हो जाता है
क्यूं के द्वादश वर्ष लीखा ता॥
दशावर्षे व्यति-क्रान्ता कंन्याशुद्धि वि
वर्जिता इन्ह वाक्यों से अब नक्ष-चि
न्तामणि का श्लोक लिखते है॥ नष्ट
त्मजा धनवती विधवा कुशी
ला पुत्रान्विता हतधवा शुभ
मावपुत्रा स्वामि प्रिया विगत पु
त्र धनाधनाढ्या वैधव्य भवेत्स
र गुरौ क्रम शो॥ मि जन्म॥२॥

भावटीका ॥ जो कन्या को जन्म का
बृहस्पति हो तो उसकी संन्तान नष्ट
हो जावे इसवास्ते जन्म का बृहस्प
ति नेष्ट है ॥ और जो दूसरे स्थान
गुरु हो तो श्रेष्ठ है तीसरे गुरु हो तो
विधवा करे ४ चौथे हो तो कुशी
ला होने ष्टा हो जो पांचवें पूबृहस्प
ति हो तो पुत्रों कर के संयुक्त हो जो
षष्ठ स्थान गुरु हो तो पति नष्ट हो स
प्तम स्थान गुरु हो तो श्रेष्ठ है ८ अ
ष्टम स्थान गुरु हो तो पुत्र रहित हो
जो नवम स्थान गुरु हो तो स्वामि
को प्रिय हो जो दशम स्थान गुरु हो तो
पति रहित हो जो एकादश स्था
ने गुरु हो तो धनवती हो ॥ जो बा
रवें स्थान गुरु हो तो वंध्या करे ॥

पर, वाक्य गोरण है इसको कोई देखता नहीं है।

विवाह प्रकरण में गर्भाधानात् विषय वा को नाम मात्र काल:॥ कौन को तिः॥
समारूढ़: सप्त मास दिन त्रयं कन्याकात्वं भवे तस्याः स्वेच्छया नामतत्पर: ॥२॥

शी० टी० प० २८ — ॥ दश वर्ष मिता कन्या सप्त मास दिन त्रयं एतत्काल मतिक्रान्ता कन्या नाम पर्यच्छते ॥२॥ दश वर्ष से उपरान्त कन्या का और नाम धर कर विवाह कर लेना बहुधा का उपर लिखे हैं और गि मि धारि काला ल के पश्चात् ॐ मे... के पश्चात् में भी पत्र पर पर बहुतों का लिखे हैं॥

श्रीगणेशायनमः॥ मुहूर्तचिन्तामणौ विपूब ३४
धारणामूचिवाहगकेती॥ तत्रादौ द्विवर्षेनक
न्यकानां समगर्भेयुग्मेड्वे कौ पास्थात रविगु
द्विवणा चुंभोन एणा प्रथम पक्षेद्रु भिकुद्वि
तोभिकाहः॥ वसहनारदः॥ युग्मेऽब्दे जन्म
तः स्त्रीणां शुभदं पाणिपीडनम् एतत्पुंसाम
युग्मेऽब्दे व्यत्यये नाशनं तयोः॥ इति क
श्यपोऽपि॥ विवाहो जन्मतः स्त्रीणां युग्मेऽब्दे
पुत्रपौत्रदः॥ युग्मे श्रीप्रदः पुंसां विपरीते
तु मृत्युदः॥ ज्येष्ठवर्षभवे ज्यैष्ठे निजवर्षेच
रोहिणीदत्रवर्षभवे कन्या हृदको बब
लीद्रुता॥ अत्र याद्ध्वं मयुग्मवर्षे
युग्मेतु मासत्रयमेवयावत विवाहशुद्धिं
मवदंति संतो वात्स्याद योगर्जवराद सु
ख्याः॥ अयुग्मे दुर्भगा नारी युग्मेतु
विधवा भवेत तस्माद्गर्भान्विते युग्मे वि
वाहे सा पतिव्रता॥ गौरी ददन् नाक
लोकं सावित्रीं रोहिणीं ददन्त कन्यां
ददत् स्वर्गलोकमतः परं प्रसदत्ति
गौरी तो नर्ज लोक नाम वैकुंठ गौरी सि
कौ देती है॥ सावित्री तो स्वर्गलोक तो कोका

यदातु कंन्याकालातिक्रांता भवति
तदा गृहव्यसमनावृषभकमित्याह
व्यासः॥दशवर्षव्यतिक्रांता क
न्याशुद्धिविवर्जिता तस्यास्तारेंदु
लग्नानाम शुद्धौ पाणिग्रहेण तः॥
ग्रहशुद्धिर्म्या वृशुद्धि देवार्ध्वा
वधिस्मृता दशवर्षव्यतिक्रांता कन्या
शुद्धिविवर्जिता॥मिथुनकुंभमृगा
लिवृषाजगे मिथुनगेऽपिरवौत्रि
लवशुचेः अलिमृगाजगतेकर
पीडनं भवति कार्तिकपौषमधु
ष्वपि॥भाषाटीका॥मिथुनके सूर्य
मे विवाह करना मिथुनके सूर्य मे वि
आषाढ शुदि प्रतिपदा से लेकर दश
मी पर्यंत विवाह शुभ है॥विवाह
मे सोरमास हि ना श्रेष्ठ है उक्तं च॥
विवाहशे दोरूवतः सौरो म

शादौ सा शुभो मतः ॥ मिथुन कुंभ
मकर वृश्चिक वृष मेष इन संक्रा
न्तियों मे विवाह करना ॥ पौषेऽपि म
करस्थेऽर्के चैत्रे मेषगते रवौ ॥ आषा
ढे मिथुनादित्ये कर्त्तव्यः करपीड
नम् ॥ भाषाटीका ॥ पौष मे मकर
का सूर्य होवे ॥ और चैत्र मे मेष
का सूर्य होवे ॥ आषाढ मे मि
थुन का सूर्य हो ॥ आषाढ शुदि द
शमी पर्यन्त मिथुन का सूर्य हो
तो विवाह कर लेना श्रेष्ठ है
॥ अथ आद्यगर्भसुतकन्ययो
र्द्वयोर्जन्ममासभतिथौ कर
ग्रहः ॥ नोचितोऽथ विबुधैः प्रश
स्यते चेद्द्वितीयजननः शुभः प्रद
न्द ॥

और सोमवार को बुधवार को और शनिवार को वा
म लगाने शुभ है और और वर्जित हैं उक्तं च तै
लाभ्यंगे रवौ तापः सोमे सोभा कुजे मृतिः बु
धे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःख शनौ सुख मर
जो रविवार को वा गुरुवार को वा शुक्र
वार को वा इति विवाह सार णी भाषा
मंगल वा नुवाद समाप्तः श्रीः शुभ मस्
र को वा न ल

गावे तो हानि दाति है
जो इन वारों में लाने का लगावना चाहे तो
वते लदोष परिहार लक्ष्य ते हैं ११ रवौ पुष्पं
गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका गोमयं शु
क्रवारे च तैलाभ्यंगे न दोष भाक् ॥
यह वस्तु पावर लाना न लगा लेना यह
अत्यावश्यक में परिहार है
लगि संजे धातु से लग्न सिद्ध होता है लगेन त्व
मपि निपात्यते ॥

२. गण्डान्त चन्द्र उभौ हन्यात् तस्मादेतान्विवर्जयेत्
तो नष्ट चन्द्रमा गण्डान्त चन्द्रमा मे विवाह नही करणा ॥

॥ और कार्य भी कोई नही करणा ॥ 36

साहे मे इतनी वाती देखणी ॥ प्रथम वर कन्या को सूर्य गुरू का बल देखणा ॥ फेर चन्द्र बल देखणा ॥ फेर विवाह के नक्षत्रों को देखणा ॥ और लग्न की शुद्धि को भी देख लेना जो शुद्धि लग्न की रहे वाह शुद्ध है दोष रहित है जो नाडि है वो ह दोष वाली है ॥ अब दो बस्तु रे यहां तो देखणे यह देखणे चाहिये ॥ द्व्यादि तिथि ॥ और तिथि साम्य २ वेध ३ वारा ४ और दो घाति घ देखणी ॥ और

नष्ट चन्द्रमा ॥ अथ विवाहसारणी लिख्यते ॥ देखणा जो चतुर्दशी को चन्द्रमा होवे वोहि चन्द्रमा ते भाषा नवार ॥ जो अमावस्या

कर्क कोई होने चाहिये मीन के १ होने चाहिये वृश्चिक धनु मेष को दंड कर्म रविके मध्य कन्या तुला मीन मे ऐसा पूर्व जानिए शुभ मन गते लग्न के इसपर के दंड मासुधन का के नाम सिंह का रवि कुंभ इसके प्रमाण है कन्या तुला मीन मेष इनके १ बाम है ॥ अथ कर अलिखि विध क शुभ मिथुन कर्क इनके कोई प्रमाण है इसे वाक्य से स्पष्ट शास्त्र से भी शुभ और लोक से भी शुभ है

अथतैलमर्दनमुहूर्तः पानिवान लगाने का मुहूर्त ॥ मेषादिराशिजवधूर्वरयोर्व टोक्यतैलादिलावन निधोकपिता हि संख्या घोलादयः पारदिगादि नगादिबाणावाणा दावाणा जीरयो मेनिमिक्ष्य कैश्चित ॥१॥ भाषा टीका

मेषराशि के बान ७
वृषराशि के बान १०
मिथुनराशि के बान ५
कर्कराशि के बान ६
सिंह के बान ५
कन्या के ५
तुल के ५
वृश्चिक के ५
धन के ५
मकर के ५
कुंभ के ५
मीन के ३

जोइस श्लोक मेष वृष के १० बान कर्क के ६ बान और मीन के ३ बान लिखे है सो लोक व्यवहार है ५६ सभा से वृष के ५ बान होने चाहिये मीन के ?

अनका च इना इ५
नेनेके
३७
ग्नमेकेवं
ग्रमामेपं
वेकतेवर्ज
नायमेउत्तंव
ज्यातिषसार
पत्र ७८

जन्मस्थदेश
शके चे पंचवं
मो त्रीवर्ज पेतं
नोपुष्ठवि

रविभा... स
...रा...
देवं
ईप्यादेकावर
देशेखाद्देशि
तीव्रैमारोर
गवैधरेकेव
वमवंस तेरा

वेउट मवेप
नमू

वध्यरकोरा
गोस२प्रष्ण
विवाह सप्त
न्जेनीष है
नोतिसारम
पत वा वालि
खाट

शेरनोवेरतीरे

र विधा। इस
प्रकारे देवर्षि
इमाहीं वानर
तेजें सु हो कि
तो कैसा होर
गेदवा रे वें कि
यमबर्ग हैं।।

चेष्टमिवेप
नमूप ३०

यच्छवरकीरा
पिसे॰प्रबध्म
निबद्धलेख
नजीनाथहै
॰गोलिप्सारमे
पहयावालि
खाहै

शेरणीघईतिवे

~~शवपेको~~

~~हेर्नवे~~

बेसातवर्ष

तगेकोईमी

हेलेगवेहेतव

उपासजोरुग

र ८ बाव

पेसप हेगा

लमवपेउने

बैज्या तमोव

कोहेगरेसे

सेप

[illegible]

अथ भद्राविचारः शोधवो

दिवा भद्र प्रथम दल में और रात्रि भ-
द्र पर दिने तदा विष्टि कृतो
दये वो हि भद्र सर्व सौख्यदा
दीवी है जेष्ठ कृष्ण पक्ष में १।१५
और ... पक्ष में = ११५ है
तृथि वा भद्रा उत्तर दल में खका
है जो भद्रा हो तो हर सावो न भद्र
दिन से रात्र को है उसको दिवा
भद्रे कहते हैं जो हो दिवा भ-
द्रा रात्रि में हो जावे और शुक्ल
पक्ष में ८।११।१५ और कृष्ण पक्ष
में ३।७।१० को भद्रा पर दल में
होती है परन्तु जो उसको कहते
हैं कि रात्रि से लेकर उस
को रात्र भद्रा कहते है जो वो
रात्रि भद्रा दिन में हो जावे

~~२७~~ षको

~~रूपर्व~~ ~~है~~

~~१~~ १सातवर्ष

त्ताने कोर्ट माहि

ले होगये हे तब

उ पास जोड क

र दाव

पेसव होगा

~~सब~~ ब घडे

मीर जाव सोव

कहे कर वैसे

सो म वर्ष

अथ भद्र त्रिवेणी सोधवे
ध्येयाय भद्र

दिवा भद्र अथ देहसौ रात्रि भद्र पर दिने तद्वि कृती
द वो दोष भवे सर्व सौख्य दो
छै ...अपक्ष मे १५
...पक्ष मे १५
तिथि वा भद्र ... दल मेकवा
... हो तो ... सो वो भद्र
दिनसे रात्रि के ... उसको दिवा
भद्र कहते है जो ... दिवा भ
द्र रात्रि मे हो ... और ...
पद मे ... कृष्ण पक्ष
मे ३।१०। की भद्रा पर दल मे
होती है पर ... जा उसको कह
ते है ... रात्रि से ... कर उस
को रात्रि भद्रा कहते है जो वो
रात्रि भद्रा दिन मे हो जावे

जो भद्रा को देखना है उसका है
वो कहते हैं भद्रा उसके नीचे का
है तो ह नित भद्रा निर्णयः॥
[illegible] भद्रा के देखने ३ घड़ि है
रहे है तब तो घर जो है वो ले
ह ते और ६ सम [illegible] भद्रा
में कार्य चल और [illegible]

विष्टि रहार के [illegible] महती
[illegible] भद्रा
[illegible] भद्रा [illegible]
होती है [illegible]

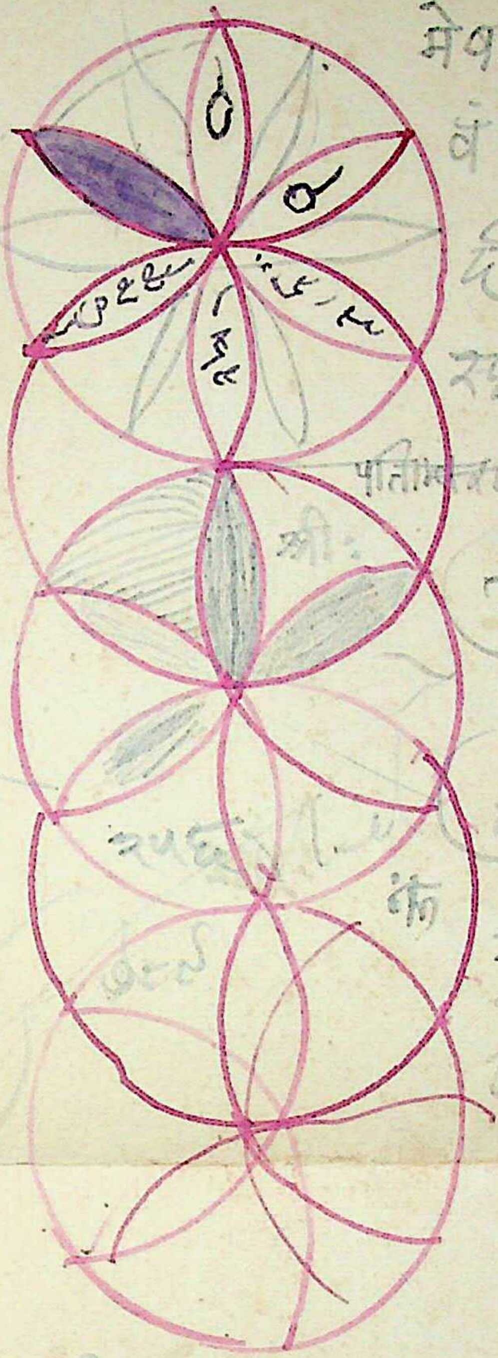
कृष्णपक्ष की ३।१० पराह्न भद्रा

कृष्णपक्ष की ७।१४ को पूर्वाह्न भद्रा

शुक्लपक्ष की ४।११ पराह्न भद्रा

शुक्लपक्ष की ८।१५ पूर्वाह्न भद्रा

श्रीमते वासुदेवाय नमः



मेवाड़ संप्र
वं विष्णो
दिष्टिन
स्था बनो
पतीमलदासजी

सर्वे नासुदेवः

श्री

सर्वधर्मान्परि
त्यज्य मामे
कं शरणं
व्रज अहं

रामानुज भाष्यकार

२२३-५८

40

श्रीः

योनित्यम च्युतपदाम्बुजयुग्मरूक्मो

ह तस्स दि तमणि ह्यागा

धमैन्प्रस्पद् शे मे

ग व ता स्या पैक

पिसन्धारामानुजस्य च

रणौ प्रपद्ये